जबान और शर्मगाह की हिफाजत

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

'नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.'

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

{१} बुखारी; सहल बिन सअद रदी.

खुलासा- रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया अगर कोई शख्स मुझे अपनी जुबान और अपनी शर्मगाह की हिफाजत की जमानत दे दे तो में उसके लिये जन्नत की जमानत ले लूंगा. इन्सान के बदन में ये दो खतरनाक और कमजोर जगहें है जहा से शैतान को हमला करने में बडी आसानी है, ज्यादा तर गुनाह इन्हीं दोनों से होते है अगर कोई शैतान के हमलों से उनको बचा लेगा तो जाहिर है की उसके ठहरने की जगह जन्नत ही होगी.

{२} बुखारी, रावी हज़रत अबू हुरैरा रदी.

खुलासा- रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया बन्दा एक बात जुबान से निकालता है जो अल्लाह को खुश करने वाली होती है बन्दा

उसका खयाल नहीं करता (यानी उसको अहमियत नहीं देता) लेकिन अल्लाह उस बात की वजह से उसके दर्जे बुलंद करता है. इसी तरह आदमी अल्लाह को नाराज करने वाली बात जुबान से लापरवाही में निकालता है जो उसे जहन्नम में गिरा देती है. आप ﷺ के इस फरमान का मतलब ये है की आदमी अपनी जुबान को बे-लगाम ना छोडे, जो कुछ बोले सोच कर बोले, ऐसी बात जुबान से ना निकाले जो जहन्नम में ले जाने वाली हो.